अध्याय
03

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग
आरंभिक समाज
(लगभग 600 ई० पू० से 600 ई० तक)

आरंभिक समाज

(लगभग 600 ईसा पूर्व से 600 ई०)

- **विद्यार्थी छठी शताब्दी ईसा पूर्व से छठी शताब्दी ईस्वी तक की सामाजिक संरचनाओं को जान सकेंगे।**
- **विद्यार्थी इस दौर के विभिन्न साहित्यिक स्रोतों एवं उनकी अवधारणाओं से परिचित होंगे।**
- **विद्यार्थी विशेष रूप से इस दौर के समाज एवं परिवार के स्वरूप, जाति प्रथा, महिलाओं की स्थिति, विवाह आदि सामाजिक जीवन के विविध पहलुओं को समझ सकेंगे**
- लगभग 600 ईसा पूर्व से600 ई० के दौरान भारतीय समाज में आए विभिन्न राजनीतिक एवं आर्थिक परिवर्तनों ने उस दौर के समाज को विशेष रूप से प्रभावित किया।

आरंभिक समाज

- महत्वपूर्ण राजनीतिक एवं आर्थिक परिवर्तन
- लौह क्रान्ति ने बड़े राज्यों के निर्माण एवं कृषि विस्तार में अहम भूमिका निभाई।
- इससे स्थाई निवास को मजबूत आधार मिला।
- छठी शताब्दी ईसा पूर्व में द्वितीय नगरीकरण का विकास हुआ। इससे सामाजिक गतिशीलता को गति मिली।
- इस दौर में नए शिल्पियों एवं व्यापारिक वर्गों का उदय हुआ।
- संपत्ति के असमान वितरण से समाज में असमानता का विकास हुआ।

© JCERT not to be republished

साहित्यिक स्रोतों की भूमिका:-

- इस दौर के इतिहास लेखन में साहित्यिक स्रोतों की अहम भूमिका है।

साहित्यिक स्रोतों की भूमिका

- प्रमुख साहित्यिक स्रोत
- महाभारत
- रामायण
- अष्टाध्यायी
- अर्थशास्त्र
- पुराण साहित्य
- मनुस्मृति
- कालिदास के नाटक एवं महाकाव्य
- नाट्यशास्त्र
- जैन साहित्य
- पिटक साहित्य
- विदेशी यात्रियों के वृतांत

- इस दौर के इतिहास के अध्ययन में साहित्यिक स्रोतों की विविध भूमिकाएँ हैं।

स्मरणीय तथ्य

- साहित्यिक स्रोतों का योगदान
- सामाजिक व्यवहार के अध्ययन में सहायक
- सामाजिक परंपराओं एवं रीति-रिवाजों की जानकारी
- सामाजिक स्तरीकरण की सूचना
- पारिवारिक संरचना की जानकारी
- समाज के स्वरूप की जानकारी
- विभिन्न सामाजिक दृष्टिकोणों की जानकारी
- भाषाई विविधता का ज्ञान
- नाट्यशास्त्र
- जैन साहित्य
- पिटक साहित्य
- विदेशी यात्रियों के वृतांत

- इस दौर के सामाजिक जीवन के अध्ययन में महाभारत की महत्वपूर्ण भूमिका है।

साहित्यिक स्रोतों की भूमिका

- महाभारत
- महाभारत का रचनाकाल 500 ईसा पूर्व से 500 ई० तक है।
- महाभारत की रचना वेदव्यास द्वारा की गई।
- महाभारत में एक लाख श्लोक हैं।
- भगवदगीता में महाभारत के दार्शनिक मूल्य निहित हैं।
- महाभारत कौरवों एवं पांडवों के बीच युद्ध की गाथा है।
- कौरव एवं पांडव एक ही कुल के स्वजन थे।

© JCERT not to be republished

बंधुता एवं विवाह

परिवार एवं विवाह

परिवार का स्वरूप पितृसत्तात्मक था।

परिवार के लिए संस्कृत ग्रंथों में कुल शब्द का प्रयोग किया गया है।

कुल के प्रधान को कुलप कहा जाता था।

प्रायः विवाह परिवार द्वारा निर्धारित होते थे।

समकालीन समाज में अष्ट विवाह पद्धति का प्रचलन था।

विवाह गोत्र के बाहर होते थे।

बहुपत्नी विवाह का प्रचलन था।

कहीं-कहीं बहुपति विवाह के भी उल्लेख मिलते हैं।

महाभारत में द्रोपदी नामक कन्या का विवाह पांच पांडव भाइयों के साथ होने का उल्लेख मिलता है।

विवाह पश्चात स्त्रियां पति के गोत्र से संबंधित हो जाती थीं।

भारत में ब्राह्मण धर्म का विकास 1000 ईसा पूर्व के बाद हुआ।

गोत्र का नाम वैदिक ऋषियों के नाम पर होता था।

वैदिक ऋषि से संबंधित गोत्र वाले उसी ऋषि के वंशज माने जाते थे।

© JCERT not to be republished

समाज में आठ प्रकार के विवाह प्रचलित थे।

- ब्रह्म विवाह
- प्रजापत्य विवाह
- देव विवाह
- आर्ष विवाह
- गन्धर्व विवाह
- असुर विवाह
- राक्षस विवाह
- पिशाच विवाह

सामाजिक असमानताएँ:-

- जाति-जन्म आधारित सामाजिक विभाजन।
- इस दौर में समाज चार जातियों में विभाजित था।

सामाजिक असमानताएँ

- ब्राह्मण-धर्म+प्रशासन
- क्षत्रिय-राजनीतिक +सैन्य
- वैश्य-वाणिज्य व्यवसाय
- शूद्र-कृषि, शिल्प, मजदूरी आदि।

समाज में जाति व्यवस्था

- जाति व्यवस्था
- जाति व्यवस्था के उद्भव का प्रथम प्रमाण ऋग्वेद के पुरुष सूक्त में मिलता है।
- बौद्धों ने जन्म के आधार पर सामाजिक विभाजन को अस्वीकार कर दिया।
- वस्तुतः ब्राह्मण सिद्धांतों के अनुसार क्षत्रिय जाति में राजत्व निहित था।
- राजत्व का उपभोग योग्यता, संसाधन और समर्थन के आधार पर दूसरी जाति के लोग भी करते थे।
- शुद्रक द्वारा रचित नाटक 'मृच्छकटिकम्' में चारुदत्त नामक ब्राह्मण -वणिक पात्र की चर्चा है।
- बौद्ध साहित्य के अनुसार मौर्य क्षत्रिय कुल के थे।
- ब्राह्मण साहित्यों के अनुसार मौर्य निम्न कुल के थे।
- शुंग, कंव, सातवाहन वंश के राजा ब्राह्मण कुल के माने जाते हैं।
- शक शासक मध्य एशिया से भारत आए थे।
- शक शासक रुद्रदामन ने सुदर्शन झील का जीर्णोद्धार कराया था। इसका उल्लेख जूनागढ़ अभिलेख में मिलता है।

© JCERT not to be republished

पंचम जाति

भारत में पांचवी शताब्दी ईसा पूर्व में पंचम जाति का उद्भव हुआ

ये जातियां चतुर्वर्ण व्यवस्था से बाहर थीं।

इन्हें अछूत माना जाता था।

अछूत जातियों के कुछ उदाहरण थे-निषाद, चांडाल, म्लेच्छ आदि।

चीनी यात्रियों- फाह्यान एवं ह्वेनसांग ने अछूतों का वर्णन करते हुए कहा है कि इन्हें गांव और नगरों से बाहर रखा जाता था।

बौद्ध ग्रंथ 'मातंग जातक 'में मातंग नामक एक बोधिसत्व का उल्लेख है जिसे चांडाल के रूप में चित्रित किया गया है।

समकालीन समाज में सबसे बड़ी विषमता अछूत प्रथा में ही दिखती है।

महिलाओं का संपत्ति में अधिकार

महिलाओं का संपत्ति में अधिकार

महिलाओं का संपत्ति में अधिकार नहीं था।

महिलाओं का स्त्रीधन पर स्वामित्व होता था।

विवाह के समय महिलाओं को मिले उपहार को स्त्रीधन कहते थे।

व्यवसाय आधारित नए व्यापारिक वर्ग

बुनकर

बढ़ई

स्वर्णकार

लोहार

वर्ग-व्यवसाय आधारित सामाजिक विभाजन।

छठी शताब्दी ईसा पूर्व में **द्वितीय नगरीकरण के आरम्भ** होने के पश्चात समाज में कुछ व्यवसाय आधारित नए वर्गों का उदय हुआ।

कहा जा सकता है की छठी शताब्दी ईसा पूर्व से छठी शताब्दी ईस्वी तक भारत के राजनीतिक एवं आर्थिक जीवन में आए महत्वपूर्ण परिवर्तनों ने सामाजिक जीवन में कई परिवर्तनों को प्रदर्शित किया। हालांकि भारतीय समाज में पूर्ववर्ती समाज की अधिकांश परंपराएं कायम रहीं। परन्तु व्यापारिक वर्ग की प्रतिष्ठा में वृद्धि हुई।

© JCERT not to be republished

बहुविकल्पीय प्रश्न;-

1. महाभारत की रचना किसने की?

   a. महर्षि वेदव्यास b. महर्षि वाल्मीकि

   c पाणिनि d. कौटिल्य

2. भारत में जाति प्रथा का उद्भव किस काल में हुआ?

   a. उत्तर वैदिक काल b. ऋग्वेद काल

   c. बुद्ध काल d. गुप्त काल

3. अछूत प्रथा का उद्भव किस काल में हुआ?

   a. उत्तर वैदिक काल b. बुद्ध काल

   c. गुप्त काल d. मौर्योत्तर काल

4. फाह्यान किस देश का यात्री था?

   a. श्रीलंका b. जापान

   c. पुर्तगाल d. चीन

5. स्त्रीधन पर किसका अधिकार होता था?

   a. पिता b. पुत्र

   c. पति d. महिला

लघु उत्तरीय प्रश्न;-

महाभारत का सामान्य परिचय प्रस्तुत करें।

जाति प्रथा से क्या समझते हैं?

स्त्रीधन से क्या समझते हैं ?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न ;-

छठी शताब्दी ईसा पूर्व से छठी शताब्दी ईस्वी तक के काल में विवाह प्रथा के मानदंडों का विश्लेषण करें।

छठी शताब्दी ईसा पूर्व से छठी शताब्दी ईस्वी तक के काल में महिलाओं की स्थिति का वर्णन करें।

© JCERT not to be republished